वैश्विक जीवन-मूल्य और गांधी

संपादक

डॉ. रमाकान्त

PRINCIPAL
Art, Science & Commerce
College, Chikhaldara

© लेखक

ISBN : 978-93-89809-51-0

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2021
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 200/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

VAISVIK JEEVAN-MULYA AUR GANDHI
Edited by Dr Ramakant

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

PRINCIPAL
Art, Science & Commerce
College, Chikhaldara

अनुक्रम

1. हरियाणवी लोक साहित्य में नारी की दशा — 9
डॉ. रामाकान्त

2. भारतीय जीवन-मूल्य और-विश्व — 20
डॉ. लक्ष्मी तिवारी

3. समकालीन भारत एवं विश्व में गाँधी के चिंतन व जीवन-सिद्धांतों की प्रासंगिकता — 31
अभिषेक सौरभ

4. महाभारतकाल में भारतीय जीवन-मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन — 38
आशा सिंह

5. भारतीय जीवन-मूल्य और विश्व — 43
रोशनी चंद्राकर

6. भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्य — 48
मनोज कुमार जायसवाल

7. भारतीय संस्कृति : मानवीय जीवन-मूल्य — 54
डॉ. नीलाक्षी जोशी

8. भारतीय जीवन-मूल्य और विश्व — 59
ईश्वर चंद्र

9. भारतीय जीवन-मूल्य — 65
प्रो. आनंद रणजीत बक्षी

10. भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य में प्रतिबिंबित वैश्विक जीवन-मूल्य — 68
भूपेश

MJL
PRINCIPAL
Art, Science & Commerce

भारतीय जीवन-मूल्य

प्रा. आनंद रणजीत बक्षी
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय
चिखलदरा जि. अमरावती, महाराष्ट्र

समाज में किसी भी व्यक्ति की प्रतिष्ठा की पहचान उसके जीवन-मूल्यों से किया जाता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए जीवन-मूल्य अत्यावश्यक है। वैदिक काल से लेकर, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी तक अनेक महापुरुष अपने जीवन-मूल्यों के कारण इतिहास में अमर हो गए। महान व्यक्ति अपने कार्य, व्यवहार और आचरण जीवन में ऐसे मूल्य स्थापित कर जाता है जिन पर चलकर समाज और भावी नागरिक अपने जीवन को सुखी और सफल बना लेते है। ऐसे व्यक्ति ही समाज में प्रणेता कहलाते है। ''सामान्यतः जीवन-मूल्य व्यक्ति का वह आंतरिक गुण है जो विकास की ओर ले जाते हुए उसके जीवन को संरक्षित रखते है।''[1] इसी क्रम में डॉ. शोभा दीक्षित अपने ग्रंथ 'साहित्य में जीवन-मूल्य' में लिखती हैं कि ''जीवन में व्यक्ति की आत्मा संतुष्टि जिन गुणों के द्वारा होती है–वे गुण ही जीवन-मूल्य हैं।''[2] पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक देश-स्थान में सबकी संस्कृति, सबका जीवन जीने का तरीका अलग-अलग होता है। ये जीवन जीने का अलग तरीका, ढंग और संस्कृति ही उस देश-स्थान या समाज के जीवन-मूल्य कहलाते हैं। डॉ. जगदीश गुप्त की अवधारणा है कि बिना मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखे मूल्य की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य के दैनिक जीवन में मूल्य का अटूट संबंध है। मानव जीवन के प्रत्येक दिन नए परिवेशों का अवलोकन एवं अनुभव करना चाहता है। इनके मूल में मूल्य की ही प्रबल सत्ता होती है। मूल्य के अभाव में मनुष्य एक पल भी नहीं रह सकता। मूल्य का संबंध निर्णय से है और उसकी जरूरत मनुष्य को पग-पग पर पड़ती है। निर्णय छोटा हो या बड़ा, चाहे जान बूझकर किया जाए या अनजाने में, वह किसी मूल्य का आधार लेकर ही किया जाता है इस संबंध में अज्ञेय का कहना है कि–

Art, Science & Commerce
College, Chikhaldara

"हम मानते हैं कि सब प्रतिमानों का, सब मूल्यों का स्रोत मानव का विवेक है, वही उसे सदासद का ज्ञान देता है–फिर उस सत और असत का क्षेत्र चाहे जो हो।"[3]

कुछ सम्यक कार्य जिनका संबंध मनुष्य के शरीर, मन, प्राण, बुद्धि आदि से है जिनके द्वारा मनुष्य के मानवीय गुणों का दिग्दर्शन होता है, जीवन-मूल्य कहलाते हैं। इस प्रकार व्यवहार के कुछ नियम जिन्हें हम नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों में बाँट सकते हैं। मानव का मानव व समाज के प्रति, मानव का प्रकृति-जड व चेतन के प्रति, मानव का समस्त ब्रह्मांड के प्रति व्यवहार इन्हीं मूल्यों के आधार पर होता है। यद्यपि अपने जीवन में हम जो मूल्यों को जमा करते हैं, वह भी हमारे जीवन का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपने मूल्य भी विरासत में अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं। मूल्यों की रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है। एक समय अपने इस भारतवर्ष में ऐसे लक्षवधि सुशिक्षित मनुष्य रहते थे, यही कारण था जो यह देश जगद्गुरु बना। वे सभी सुक्षिशित महापुरुषों का जीवन अक्षय मूल्यों से अलंकृत थे। देव-धर्म, साधु संत, कथा-कीर्तन, पोथी-पुराण के द्वारा वे मूल्य प्रस्थापित हुए थे। यही जीवन-मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं वे समाज में व्यर्थ माने जाते हैं। मूल्यहीन व्यक्ति की जिंदगी पंगु मानी जाती है। जिसमें कोई गति और निरंतरता नही होती और सिद्धांतों के अभाव में ऐसे लोग महत्त्वहीन, अनुपयोगी और परिवार के लिए बोझ स्वरूप होते हैं।

धरा पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का श्रेय उन उदात्त जीवन-मूल्यों को है, जिनके माध्यम से वह अपना सात्विक जीवन बिता रहा है। प्रत्येक राष्ट्र की एक परंपरागत संस्कृति होती है, जिसका निर्माण उन मूल्यों के आधार पर होता है जिन्हें वहाँ के महापुरुषों ने अपने जीवन में अपनाया। वस्तुतः इन्हीं मूल्यों को अपने जीवन में उतारकर उनका चरित्र एंवं व्यक्तित्व गौरवमय बनकर इतिहास में अमर हो गए। जीवन अनेक सत्यों, आदर्शों और नियमों के द्वारा संचालित होता है। इन्हीं के द्वारा जीवन-मूल्य स्थापित होते हैं। समाज सर्वदा ऐसे ही महान लोगों का अनुकरण करता है। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कुछ मूल्य निर्धारित करने पड़ते हैं–"जिस समाज के मूल्य मनुष्य के आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास के विविध सोपानों को इंगित करके उसे प्रगति की ओर अग्रसर करने में सहायक बनते हैं, उस समाज एवं राष्ट् की गणना विश्व के महानतम सुसंस्कृत राष्ट्रों में की जाती है। दूसरे शब्दों में सामाजिक मूल्य किसी समाज के सदस्य श्रद्धा व्यक्त करते हैं और जिन्हें सामाजिक जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।"[4] इसके अभाव में मनुष्य कभी अपने जीवन में सफलता

हासिल नहीं कर सकता। हम समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बने, यही हमारी सार्थकता हैं। निःसंदेह मूल्यों का चयन करने में हमारे लिए प्रारंभ में कठिनाइयाँ आएँगी जिनसे हमे जूझना पड़ेगा। जीवन-मूल्य सहज निर्धारित नहीं होते, इसके लिए त्याग और सत्य के तत्त्व जरूरी हैं।

जीवन-मूल्य आज के युग मे आवश्यक हैं। जीवन-मूल्य के द्वारा ही हम एक मानव को दूसरे मानव के निकट लाने का प्रयास करते हैं और 'वसुदैव कुटुंबकम्' की भावना का संदेश दे सकते हैं। आज मनुष्य भ्रष्टाचार और स्वार्थ में इतना अधिक लिप्त हो चुका है कि धन के लिए भाई-भाई का पुत्र-पिता का रक्त बहाने से पीछे नहीं रहता। आज के आधुनिक युग में सदाचार और संयम को हम पिछड़ेपन की संज्ञा देते हैं। यह बात सत्य है कि इन मूल्यों को भुलाकर हमने अपनी पहचान खो दी है। शांति, हर्ष, उल्लास सभी समाप्त हो गए हैं। चारों ओर लालच, आतंकवाद, धन-लोलुपता आदि का साम्राज्य है।

आधुनिक समय में वास्तविक समृद्धि की आधारशिला जीवन-मूल्य ही है। जैसे सोना आग में तपकर कुंदन होता है, विद्यार्थी निरंतर परिश्रम करके परीक्षा में सफल होता है उसी प्रकार हमें भी जीवन-मूल्यों का पालन करना चाहिए, तभी हम सफल हो सकते हैं। महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है–

सद्‌गुण को समझो सदा, खोया रत्न विशाल।
पाओ तुम उसको जहाँ, अपनाओ तत्काल।।"

संदर्भ

1. हिंदी शब्द कोष, डॉ. धर्मेंद्र शास्त्री, पृ सं 280
2. साहित्य में जीवन-मूल्य, डॉ. शोभा दिक्षित, पृ सं 58
3. हिंदी साहित्यः एक आधुनिक परिदृश्य, सच्चितानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, पृ.10।
4. ममता गुप्ता, गुरुगोविंद सिंह के काव्य में जातीय संघर्ष, पृष्ठ-208